

रात का गीत (1 अप्रैल)

भजन संहिता 25:14 यहोवा के भेद को वही जानते हैं जो उससे डरते हैं, और वह अपनी वाचा उन पर प्रगट करेगा।

उस अद्भुत वाचा का उन सब पर प्रगट किया जाना, जो परमेश्वर के वचन को सच्चाई और ईमानदारी से ढूँढते हैं, हमें यह आश्वासन देता है की, जैसे हमारे प्रिय उद्धारकर्ता ने हमारे और संसार के छुटकारे के लिये अपने आपको दीन किया और फिर उनको सर्वोच्च स्थान में ऊँचा पद दिया गया, उसी प्रकार यदि हम भी विश्वासी रहे, तो अभी के समय में हम उनके साथ दुःख उठाएँगे और बाद में उनके साथ उनके राज्य में उनकी महिमा में सहभागी होंगे और पृथ्वी के सभी लोगों को आशीष देने के कार्य में उनके सहकर्मी होंगे। अहा! अनुग्रह का क्या धन है! क्या प्रेमभरी करुणा है! क्या कोमलता से भरी दया है! दिव्य ज्ञान, कौशल, न्याय, प्रेम, और सामर्थ्य के क्या सबूत हैं! पिता के एकलौते पुत्र का यह दृश्य कितने अच्छे से हमें उनके पुत्र को हमारे उद्धारकर्ता और हमारे प्रभु और सिर के रूप में भी दिखाता है, जो की बाद में अपने वादे के अनुसार, हमें प्यार में पिता के सामने अपनी निर्दोष और निष्कलंक दुल्हन के रूप में प्रस्तुत करेंगे। इस दृष्टिकोण से देखा जाये तो, यीशु का हमारे प्रिय उद्धारकर्ता, परमेश्वर का भेजा हुआ, जगत का उद्धारकर्ता के रूप में पहचान, कहीं से भी," यहोवा हमारा परमेश्वर एक ही है", इस वचन की आज्ञा का निरादर बिल्कुल भी नहीं है। क्योंकि प्रेरित हमें आश्वस्त करते हैं की, दिव्य अधिकार के अनुसार, सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का भी आदर करें, पुत्र को पिता समझ कर नहीं, बल्कि उसका आदर पुत्र की तरह करें जिसे पिता ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया है, और जो पिता का सहयोगी बनकर, पृथ्वी के सारे परिवारों को आशीष देंगे, और जो हजार वर्ष के बाद, राज्य को परमेश्वर

पिता के हाथ में सौंप देंगे, ताकि सब में पिता ही सब कुछ हों। `Z'07-263`
R4052:1 (Hymn 154) आमीन

रात का गीत (2 अप्रैल)

व्यवस्थाविवरण 33:12 यहोवा का वह प्रिय जन, उसके पास निडर वास करेगा; और वह दिन भर उस पर छाया करेगा॥

केवल वही जो पिता पर बिल्कुल वैसा ही भरोसा रखेगा, जैसा कि, एक छोटा बच्चा अपने सांसारिक माता पिता पर भरोसा रखता है, सकेत मार्ग पर अच्छी उन्नति करने की उम्मीद कर सकता है और साहस और भरोसे को प्राप्त कर सकता है। जितने भी पिता के हैं, उन सबको को इस साहस और भरोसे के होने का अधिकार है, और इसके बिना हम परिपूर्ण शान्ति और मन का विश्राम जिसका वादा किया गया है, नहीं पा सकते हैं। "तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो", यह वादा है। परमेश्वर के करीब और ज्यादा से ज्यादा करीब जाने की तीव्र इच्छा हमारे हृदय में अवश्य होनी चाहिए, नहीं तो हम आगे जाने में और मसीह में अपने विशेषाधिकारों को पाने में असफल हो जाएंगे। परमेश्वर के करीब आने की तीव्र इच्छा, हमारी धार्मिकता के प्रति भूख और प्यास को प्रगट करती है और इससे पहले की ऐसे लोगों को तृप्त करने का अच्छा इन्तज़ाम करें, हमारे प्रभु हमसे ये उम्मीद करते हैं कि, हम धार्मिकता के लिए भूखे और प्यास हों। `Z'14-90` R5425:1 (Hymn 226)
आमीन

रात का गीत (3 अप्रैल)

नीतिवचन 10:22 धन यहोवा की आशीष ही से मिलता है, और वह उसके साथ दुःख नहीं मिलाता।

जब हम अपने सामने प्रभु यीशु मसीह का श्रेष्ठ उदाहरण देखते हैं, जो की सभी चीजों में धनी थे, और जिन्होंने अपना सब कुछ दे दिया, तब हम इसमें आनन्दित होते हैं, और यह महसूस करते हैं कि जिस प्रकार उनका बलिदान इतना बड़ा था, उसी प्रकार इसका इनाम भी उसी अनुपात में बहुत बड़ा था। जब हम प्रेरित पौलुस के श्रेष्ठ उदाहरण को देखते हैं, जो क्षमता, प्रतिभा, और प्रभाव, और संभवतः वित्तीय साधनों के धनी थे, और जिन्होंने अपनी इच्छा से, आनन्दित होकर इन सब वस्तुओं को प्रभु के चरणों पर बलिदान कर दिया, परमेश्वर की सेवा में, सत्य की सेवा में, भाइयों की सेवा में, आनंद के साथ सब कुछ बलिदान कर दिया, तब यह जानकर हमारा हृदय अति आनन्दित होता है, और हम निश्चित रूप से यह महसूस करते हैं कि, एक व्यक्ति जो बहुत धनी था, और जिसने अपने धन को इतनी ईमानदारी से खर्च किया, वह निश्चय राज्य में जब वह स्थापित और प्रगट होगा, बहुत तेज रोशनी के साथ चमकेगा। और उसी प्रकार निःसंदेह, सभी शाही राज पदधारी याजकों के साथ भी होगा - उसी अनुपात में जिस अनुपात में वे अपनी संपत्ति का बलिदान करेंगे। वे लोग जो प्रभु के लिये, सत्य के लिये, अभी के इस जीवन में सबसे बड़े तिरस्कार, सबसे बड़े अपमान, सबसे बड़ी परीक्षाओं, सबसे बड़ी ताड़नाओं को आनन्दपूर्वक सह लेते हैं, और इस प्रकार से अपने स्वामी और आदर्श, प्रभु यीशु के समान अनुभूतों से होकर जाते हैं, हम निश्चित हो सकते हैं की, जिस अनुपात में ये लोग अपने बलिदानों में विश्वसनीयता को प्रगट करेंगे, उसी अनुपात में वे भविष्य

इनाम भी पायेंगे - जैसा की प्रेरित ने घोषणा की है, "तारे से तारे के तेज में अंतर है" `Z'01-55` R2762:3 (Hymn 277) आमीन

रात का गीत (4 अप्रैल)

मत्ती 25:8 और मूर्खों ने समझदारों से कहा, अपने तेल में से कुछ हमें भी दो।

कोई भी इस पवित्र आत्मा को बहुत ज्यादा मात्रा में प्राप्त नहीं कर सकता है, कोई भी अपने स्वयं के उपयोग के लिए पवित्र आत्मा को इतने अत्यधिक मात्रा में प्राप्त नहीं कर सकता है कि वह अपनी बहुतायत से दूसरों की आपूर्ति कर सके। दूल्हे ने पहले से ही प्रचुर मात्रा में ऐसा प्रावधान किया है, जिसके द्वारा वे सभी जो शादी में उसके साथ जाने के लिए आमंत्रित हैं, उचित रीती से न केवल वस्त्र और मशालों से सुसज्जित हो सकें, बल्कि तेल भी रख सकें; और यदि कोई भी तेल को प्राप्त करने में लापरवाह है, तो वह उस समूह का होने के अयोग्य साबित हो जाता है, जो दरवाजा बंद होने से पहले दूल्हे के साथ प्रवेश करने वाले हैं। इस दृष्टान्त के द्वारा प्रभु के निर्देश का सार यह है कि - जो लोग राज्य में प्रवेश करने और प्रभु के साथ उनकी महिमा में सहभागी होने की उम्मीद करते हैं, उनसे पहले से तैयारी किये जाने की उम्मीद की जाती है। यदि वे दरवाजे के बंद होने के क्षण तक प्रतीक्षा करते हैं, वे चाहे कितने भी इच्छुक हों, कितने भी तत्पर हों, वे तैयार नहीं होंगे - तैयारी के लिए समय, धैर्य, देखभाल की आवश्यकता होती है। `Z'06-314` R3868:5 (Hymn 230) आमीन

रात का गीत (5 अप्रैल)

भजन संहिता 42:8 तौभी दिन को यहोवा अपनी शक्ति और करुणा प्रगट करेगा; और रात को भी मैं उसका गीत गाऊंगा।

यदि जहां हम हैं, और जैसी हमारी अवस्था या परिस्थिति है, उनके साथ हम परमेश्वर की स्तुति करने के लिये तैयार नहीं हैं, तो संभव है की अगर हम अलग - अलग परिस्थितियों में हों, और हमारी अवस्था बिल्कुल वैसी हो जो अभी हमें सबसे अधिक पसंदीदा लगती है, तब भी हम परमेश्वर की स्तुति न करें। दानिय्येल सिंहों की माँद में ज्यादा अच्छे से सो पाया जबकि राजा दारा को अपने महल में भी नींद नहीं आई; वह जो शेर की माँद में आराम नहीं पा सकेगा, जब वह उसके लिए जगह थी, तो उसे हटाकर एक महल में रखने से भी वह आराम नहीं पा सकेगा। यह आदमी का स्वयं है जिसे बदला जाना चाहिए, न कि उसकी परिस्थितियों या उसकी संपत्ति को, ताकि उसका हृदय आनन्द और स्तुति से उमड़े। `Z'02-381`
R3123:4 (Hymn 236) आमीन

रात का गीत (6 अप्रैल)

यशायाह 40:31 परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे, वे उकाबों की तरह उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे॥

मसीह की देह के प्रत्येक अंग को, परमेश्वर के सच्चे इसराएल को, अपने वनवास के सफ़र में प्रभु से लगातार मार्गदर्शन पाने का विशेष अधिकार है। हमारे को प्रतिदिन बनाए रखने के लिए हमें स्वर्गीय मन्ना प्रदान किया जाता है। हमें नियमित ताज़गी

देने के लिए जीवन का जल हमारे तक युगों की चट्टान में से प्रवाहित होता है। हमारे पिता की ताड़ना वाली छड़ी, जब हम खतरों में होते हैं या फिर जब हम निषेध पथ में भटकते हैं, तो परमेश्वर की छड़ी हम पर रुकावट डालती है। कितने प्रेम से, परमेश्वर हमें ठीक मार्ग पर वापस में आते हैं, और हमारी ठोकरों और निर्बलताओं को चंगा करते हैं! निश्चय ही हम अपने स्वर्गीय मार्गदर्शक पर दृढ़ता से भरोसा कर सकते हैं। इस प्रकार से हम उनमें विश्राम कर सकते हैं और परिपूर्ण शान्ति में सुरक्षित रह सकते हैं। `Z'14-296` R5548:4 (Hymn 185) आमीन

रात का गीत (7 अप्रैल)

रुत 1:16 रुत बोली, तू मुझ से यह विनती न कर, कि मुझे त्याग या छोड़कर लौट जा; क्योंकि जिधर तू जाए उधर मैं भी जाऊंगी; जहां तू टिके वहां मैं भी टिकूंगी; तेरे लोग मेरे लोग होंगे, और तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा;

यहाँ पर एक विचार ध्यान देने के योग्य है; कहा जाए तो-- वो दृढ़ता और सकारात्मक नज़रिया जिसके साथ रुत ने यह फैसला लिया। यह जुडीया में रहना कैसा होगा उसे जाँचने के लिए कुछ समय का किया गया प्रस्ताव नहीं था। ये फैसला प्राण देने तक का था। इस नज़रिए से सारे सच्चे बदलाव इसी के समान होते हैं। एक मसीही, उदाहरण के लिए, जब तक पक्का, सकारात्मक समर्पण न कर ले, वो सचमुच में एक सच्चा मसीही नहीं बन सकता। उसे संसार को छोड़ने, इसके मामलों, इसके प्रेम, इसकी आशाओं, इसकी महत्वाकांक्षाओं आदि सब को प्राण देने तक के लिए दृढ़ता से समर्पित करना होगा, तभी वो सच्चा मसीही कहलाएगा। जीवन के प्रति किये गए सही सकारात्मक फैसले की कीमत का हम शायद ही ज्यादा मूल्य आंक सकें। सही

फैसला नहीं लेने के कारण, हज़ारों जीवन मुज़्रा जाते हैं। परमेश्वर के प्रति सकारात्मक नज़रिया ही एकमात्र स्थिति है, जिसमें हम, "अपने बुलावे और चुनाव को पक्का" करने की आशा कर सकते हैं। `Z'15-23` R5614:4 (Hymn 303) आमीन

रात का गीत (8 अप्रैल)

नीतिवचन 15:33 यहोवा के भय मानने से शिक्षा प्राप्त होती है, और महिमा से पहले नम्रता होती है॥

मती 7:3 वचन (तू क्यों अपने भाई की आंख के तिनके को देखता है, और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता?) का दृष्टान्त, हमें बताता है कि, हमें अपने भाईयों के आँख के तिनके (कमियों) को नहीं देखना है, जब की हमारे खुद के अन्दर इतनी सारी कमियाँ हैं। प्रभु यीशु मसीह ने इस दृष्टान्त के द्वारा हमें यह बताया है कि, जो लोग परमेश्वर के द्वारा शिक्षित किये जाएंगे, उनके अन्दर नम्रता बहुत जरूरी है। नम्रता का गुण एक बुनियादी नैतिक गुण है, जो हमारे अन्दर होना चाहिए। इस गुण के ऊपर बाकि सब गुण पैदा होते हैं, जैसे की, (मिट्टी के ऊपर फल और सब्जी उत्पन्न होते हैं)। जो यह सोचते हैं कि, वे सब जानते हैं, वे कुछ भी नहीं सिख सकते। जैसे एक लेखक ने कहा है -- जितना हम खुद को परखेंगे उतना ही ज्यादा खुद के चरित्र की कमियों को जानेंगे। दूसरे लेखक ने कहा है -- दूसरों के अन्दर दस हज़ार गलतियाँ कम माईने की हैं, हमारे अन्दर की एक छोटी गलती की तुलना में। पूरी मानवजाति के अन्दर पाप और अपरिपूर्णता का ज्ञान उन्हें नम्र बनाना चाहिए। कितना सुन्दर है यह महसूस करना कि, प्रभु यीशु मसीह जो परिपूर्ण थे, वो नम्र भी

थे। वैसे ही सब पवित्र स्वर्गदूत भी नम्र हैं। `Z'12-165` R5029:3 (Hymn 95)
आमीन

रात का गीत (9 अप्रैल)

भजन संहिता 107:7 और उन को ठीक मार्ग पर चलाया, ताकि वे बसने के लिये किसी नगर को जा पहुंचे।

आत्मिक इस्राएली के साथ मैं यह खासकर सच है कि, परमेश्वर उन्हें सही मार्ग पर ले जाते हैं, जो कि सर्वोत्तम मार्ग होता है, और इसलिए जो भी सचमुच में परमेश्वर के लोग हैं, उन्हें सावधानी से परमेश्वर के मार्गदर्शनों पर ध्यान देना चाहिए और तुरन्त उस मार्ग के पीछे चलना चाहिए। अन्त में हम निश्चित रूप से देखेंगे, कि परमेश्वर हमें सही मार्ग में ले गए, हालांकि वो मार्ग जो हमने अपने लिए चुना था, उससे बहुत अलग भी हो सकता है। ज्यादातर लोगों के साथ मुश्किल यह है कि, वे वह मार्ग नहीं लेते, जो उन्हें परमेश्वर दिखाते हैं, इसलिए उनका मार्ग सर्वोत्तम नहीं होता। उसके बावजूद भी हो सकता है कि, परमेश्वर स्वेच्छा से लिये गए मार्ग को अपने वश में कर लें, ताकि इसके कारण, कोई बड़ी चोट उन्हें न पहुंचे, जो की अगर परमेश्वर हस्ताछेप न करते तो आ सकते थे। हमारे पास जितना ज्यादा परमेश्वर का सच्चा ज्ञान होगा, उतना ही ज्यादा वो ज्ञान हमें परमेश्वर के प्रेम में सिद्ध करेगा, और हमारा विश्वास भी उतना ही बड़ा होगा, उसी के अनुसार हमारे अभी के जीवन में और आनेवाले जीवन में, के सभी परिणाम भी बहुत ही बहुमूल्य होंगे। एक तारे से दूसरे तारे के तेज में अंतर है, जो जितना ज्यादा विश्वासी परमेश्वर का जन है, और जितना ज्यादा उत्साही है, और जितना ज्यादा मसीह के जैसा है, उसके पास ज्यादा चमक होगी, जो की उसके अनुभव का आशीष भरा हिस्सा होगा।

इसलिये आइये, हम उसपर पूरा विश्वास रखें जिसने अभी तक हमें मार्ग दिखाया है, दुनिया, शरीर और शैतान से जीतते हुए जितने के लिये आगे बढ़ें, खुद के बल में नहीं पर उसके बल में जिसने यहाँ तक हमें लाया है। `Z'07-287` R4064:5 (Hymn 315) आमीन

रात का गीत (10 अप्रैल)

1 थिस्सलुनीकियों 2:4 इसमें मनुष्यों को नहीं, परन्तु परमेश्वर को, जो हमारे मनों को जांचता है, प्रसन्न करते हैं।

हृदय इच्छा को दर्शाता है, इरादों को दर्शाता है; यह जरूरी है कि, इच्छा को सच्चा रखा जाए और परमेश्वर में केन्द्रित रखा जाए। लेकिन इच्छा पूरे मनुष्य को नियंत्रित करने की शक्ति रखती है। हालांकि इच्छा मनुष्य को नियंत्रित रखने की शक्ति है, यह प्रभावित हो सकती है। यदि विचारों में अशुद्धता, अधार्मिकता और अपवित्रता आ जाए, तो इच्छा की शक्ति ज्यादा से ज्यादा क्षीण हो जाती है। इसलिए प्रेरित ने ज्ञान से भरी ये फटकार लगाई है, यह बताने के लिए कि, हमारे विचारों का चरित्र क्या होना चाहिए। जो लोग प्रभु के भय में रहते हुए सिद्ध पवित्रता की ओर प्रयत्न कर रहे हैं -- खुद को पवित्रता की सुन्दरता से सजा रहे हैं -- उनको अपने विचारों को हर किसी चराइयों में चरने की अनुमति नहीं देनी चाहिए, बल्कि निश्चय ही अनुशासन में रहकर अपने विचारों को शुद्ध और पौष्टिक भोजन कराना चाहिए। `Z'11-165` R4827:2 (Hymn 114) आमीन

रात का गीत (11 अप्रैल)

भजन संहिता 1:1,3 क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता; और न ठट्ठा करने वालों की मण्डली में बैठता है! वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है। और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिये जो कुछ वह पुरुष करे वह सफल होता है॥

हम परिपूर्णता की ऊंचाई की स्तर को तब तक नहीं पा सकते जब तक हम इस अपरिपूर्ण शरीर में हैं, परमेश्वर के प्रत्येक बच्चे में बहुत ही पूरी तरह से स्पष्ट रूप से और अनुग्रह में निरंतर वृद्धि होनी चाहिए और प्राप्त किए गए प्रत्येक कदम पर विचार किया जाना चाहिए, ताकि हम और ऊंचा प्राप्त कर सकें। यदि स्पष्ट रूप से, हम परमेश्वर की समानता में नहीं बढ़ पा रहे हैं, या हमारा झुकाव पीछे की तरफ है, या हम एक जगह पर स्थिर हैं, तब हमें सचेत होने की जरूरत है। आइए हम अपनी आंखों के सामने लगातार उस आदर्श को रखें जिसे प्रभु यीशु ने हमारे उदाहरण के लिए निर्धारित किया है--परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने का आदर्श, जिसमें पूरी व्यवस्था को दोषरहित रखा गया था। आइए हम प्रभु यीशु के धार्मिकता और आत्म-बलिदान के पदचिन्हों का पालन करें क्योंकि परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण मात्रा में प्रेमपूर्ण उत्साह और विश्वास और निष्ठा हमें यह करने में सक्षम करेगा, और हमारे पास अब दिव्य मंजूरी की एक आशीषित भावना होगी, और उचित समय में दिव्य अनुग्रह का महिमामय इनाम मिलेगा। `Z'11-180` R4835:5 (Hymn 78) आमीन

रात का गीत (12 अप्रैल)

भजन संहिता 103:8 यहोवा दयालु और अनुग्रहकरी, विलम्ब से कोप करने वाला और अति करुणामय है।

हमारा यह वचन हमें याद दिलाता है की प्रभु दयालु और अनुग्रहकरी, विलम्ब से कोप करने वाला और अति करुणामय हैं, और हम इसे अच्छी तरह से सचित्र देखते हैं, इस्राएलियों के वनवास के अनुभवों में, इस सुसमाचार के युग के प्रभु के लोगों के इतिहास में, नाममात्र के आत्मिक इस्राएल, और प्रभु के विश्वासी लोगों के मामलों में भी। क्या हम सभी यह महसूस नहीं करते हैं कि, जीवन के विभिन्न अनुभवों में, प्रभु हमारे लिए कितने धैर्यवान और दयालु रहे हैं? क्या हम यह नहीं देख सकते हैं कि वह बहुत पहले ही हमारी वाचा को रद्द करने में पूरी तरह से कैसे न्यायोचित रहे होते, और केवल उनकी दया और प्रेम के कारण हमें स्वर्ग के राज्य की ओर इस तरह से दूर तक आने की अनुमति दी गई है? निश्चित रूप से इन बातों का अहसास हमें विनम्र और भरोसेमंद बनाना चाहिए। इसके अलावा, प्रभु ने हमें सूचित किया है कि उनकी अभी और भी आवश्यकता है, अर्थात् अगर हम अपने स्वयं के मामलों में मसीह के द्वारा उसकी महानता और दया की सराहना करेंगे, तो इसी तरह हमें दूसरों के प्रति भी दया और सहनशीलता का अभ्यास करना है, जो हमारे विरुद्ध अपराध कर सकते हैं। वास्तव में, इस मामले को प्रभावित करने में प्रभु इतने सक्षम हैं कि वह सकारात्मक रूप से यह घोषणा करते हैं कि हम में से कोई भी उनके साथ संबंध बनाए नहीं रख सकता है, सिवाय इसके कि वह इस भावना, इस चरित्र को अपने भाइयों और साथी-सेवकों के संबंध में विकसित करेगा। कितना उदार, कितना विचारशील, कितना उदार, कितना क्षमाशील, हमें अपने व्यवहार में भाइयों के साथ,

विशेषकर उन लोगों के साथ होना चाहिए जिन्होंने किसी भी मात्रा में हमें या हमारे हितों को चोट पहुंचाई है। `Z'07-270` R4056:1 (Hymn 243) आमीन

रात का गीत (13 अप्रैल)

इब्रानियों 6:18 ताकि दो बे-बदल बातों के द्वारा जिनके विषय में परमेश्वर का झूठा ठहरना अन्होना है, हमारा दृढ़ता से ढाढ़स बन्ध जाए, जो शरण लेने को इसलिये दौड़े है, कि उस आशा को जो सामने रखी हुई है प्राप्त करें।

संतों के पास वास्तव में हर पीड़ा और दुःख में एक आशीषित सांत्वना है, जिसके बारे में पूरी दुनिया पूरी तरह से अज्ञान हैं। ये केवल परमेश्वर के बच्चे जान सकते हैं। यह सान्त्वना क्या है?... यह सांत्वना आशा और प्रेम और साहस की कोमलता से भरी हल्की सी आवाज़ है, जब हृदय और शरीर लगभग असफल हो रहे होते हैं। यह दिव्य सांत्वना है, जो की एकमात्र सांत्वना है, जिसमें किसी भी प्रकार से चंगाई या ताजगी का कोई गुण है। यह केवल उन श्रेष्ठ आत्माओं के लिए आरक्षित है जो राजाओं के राजा की सेवा में दिन के बोझ और गर्मी को विश्वासी होकर सह रहे हैं; जबकि जो लोग दुनिया की वर्तमान और कामुक प्रकृति के नीचे की प्रवृत्ति के साथ बुरी तरह से बह जाते हैं, वे कभी भी इस सान्त्वना की मिठास से अंतरंग नहीं हो सकते। `Z'15-345` R5803:1 (Hymn 328) आमीन

रात का गीत (14 अप्रैल)

मत्ती 15:28 इस पर यीशु ने उसको उत्तर देकर कहा, कि हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है: जैसा तू चाहती है, तेरे लिये वैसा ही हो।

जितना हम विश्वास के विषय के ऊपर अध्ययन करेंगे, उतना ही हम मानेंगे कि, परमेश्वर की दृष्टि में विश्वास न ही केवल जरूरी है, पर बहुत बहुमूल्य है। हम विश्वास के बिना परमेश्वर के पास नहीं आ सकते, विश्वास के बिना हम उनके प्रेम में नहीं बने रह सकते, उनके वादों पर विश्वास किये बिना हम दिन - प्रतिदिन उनकी करुणा, आशीषों और मार्गदर्शनों को प्राप्त नहीं कर सकते। हम जब तक उनके वचनों में लिखे वादों पर विश्वास का अभ्यास न करें, अपने आप से यह महसूस नहीं कर सकते कि हम उनकी संतान हैं, पवित्र आत्मा के द्वारा उत्पन्न किये गए हैं, परमेश्वर के वारिस और हमारे प्रभु यीशु मसीह के साथ संगी - वारिस हैं। यदि हम रूप को देखकर नहीं पर विश्वास के द्वारा चलने की इच्छा न रखें तो हम दिन - प्रतिदिन प्रभु के पीछे नहीं चल सकते, क्योंकि यही वो परीक्षा है जिसे प्रभु अपने सभी चेलों के लिए रखते हैं। संसार, शरीर और शैतान के द्वारा किये गए विरोध जो की हमें कितने घातक लगते हैं, वे वास्तव में हमारे लिए दूसरे रूप में आशीषें है, ऐसा कैसे है, इस बात को हम नहीं देख सकते, यदि परमेश्वर के वादों पर जिसमें कहा गया है कि ये आशीषें हैं, हम विश्वास का अभ्यास न करें। इसीलिए हमें स्वर्गीय राज्य में की सारी महिमाओं और आशीषों और विशेषाधिकारों के लिए बजाये इसके तैयार नहीं किया जा सकता की हमारे पास अभी विश्वास हो और हम विश्वास का अभ्यास करते रहें, जो की मसीह की पाठशाला में दिए गए विभिन्न पाठों में हमें लाभ पहुँचाने में सक्षम होगा। 'Z'06-171' R3787:5 (Hymn 174)

आमीन

रात का गीत (15 अप्रैल)

1 कुरिन्थियों 15:20 परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उन में वह पहला फल हुआ।

दूसरों को मृत्यु की नींद से केवल कुछ समय के लिए उठाया गया था ताकि बाद में उसमें फिर से प्रवेश किया जा सके, लेकिन हमारे प्रभु यीशु "मरे हुआँ में से जी उठनेवालों में पहिलौठा" थे, "जो सो गए हैं, उन में वह पहला फल" हुए - जैसा की प्रेरित ऐलान करते हैं, मरे हुआँ में से पहले जी उठनेवालों में पहले प्रभु यीशु थे। मसीह का पुनरुत्थान जीवन का पुनरुत्थान था - आत्मिक सतह पर परिपूर्णता की ओर। इस आत्मिक सतह के पुनरुत्थान में प्रभु यीशु, जो सो गए थे उनमें पहिलौठा थे, इसका मतलब यह है कि दूसरे लोग भी जो इसी तरह सोए थे, वे पुनरुत्थान में आत्मिक जन के रूप में उसी तरह से आने वाले हैं। प्रथम - फल होना इस बात को दर्शाता है की दूसरे भी उसी प्रकार के होंगे, हालाँकि हमारे प्रभु सभी सोये हुआँ में प्रथम - फल इस मतलब से भी थे कि उनका पुनरुत्थान अन्य सभी पुनरुत्थान से पहले हुआ, और इसका दूसरा मतलब यह भी है की वे कलीसिया के प्रथम - फल हैं, जो की उनकी देह है। इसका बड़े तौर पर यह मतलब भी है कि मसीह, सिर और देह, पुरे संसार में से जीवन पानेवालों में प्रथम फल हैं; जैसा की प्रेरित याकूब ने व्यक्त किया है, "उस ने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया, ताकि हम उस की सृष्टि की हुई वस्तुओं में से एक प्रकार के प्रथम फल हों।"

`Z'04-173` R3377:5 (Hymn 285) आमीन

रात का गीत (16 अप्रैल)

मत्ती 26:26 यीशु ने रोटी ली, और आशीष मांग कर तोड़ी, और चेलों को देकर कहा, लो, खाओ; यह मेरी देह है।

जैसा की रोटी सभी भोजन के लिए है और भोजन का प्रतीक है, उसी तरह यह चिन्ह-- रोटी, इस चिन्ह का उपदेश है कि जिसको कोई भी जीवन होगा, जिसे मसीह को देना होगा, उसे यह स्वीकार करना होगा कि, उसका यह जीवन प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के परिणाम के रूप में उसे मिला है। प्रभु यीशु बलिदान की मौत मरे ताकि हम जी सकें। प्रभु यीशु ने अपनी इच्छा से अपने अधिकार और विशेषाधिकारों को समर्पण किया ताकि जिनको भी उनके इस बलिदान पर विश्वास है और जो उनको और उनके आदेशों को स्वीकार करते हैं वे उनके बलिदान को अपने ऊपर लागू कर सकते हैं -- वैसे लोगों को मान लिया जाता है कि, उन्होंने परिपूर्ण मानवीय स्वभाव को पहन लिया है, जैसे आदम के द्वारा खो दिए गए अपने सभी अधिकारों और विशेषाधिकारों को मसीह के द्वारा चुकाया गया। स्वर्ग से इस रोटी को खाने के अलावा किसी के पास अनंत जीवन नहीं हो सकता है। यह न केवल इस वर्तमान समय के विश्वासियों के लिए लागू होता है, बल्कि भविष्य के लोगों के लिए भी लागू होता है। उन लोगों को पहचानना है कि, उनके जीवन का अधिकार और विशेषाधिकार जो उनको मिला है, वो मसीह के बलिदान के माध्यम से उनको मिला है। एक शब्द में कहा जाए तो, ये रोटी प्रभु यीशु की देह का प्रतिनिधि है और हमें सिखाती है कि, उनके बलिदान को स्वीकार करके हम धर्मी होते हैं। 'Z'06-334' R3879:6 (Hymn 2) आमीन

रात का गीत (17 अप्रैल)

इब्रानियों 12:3 इसलिये उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना विरोध सह लिया कि तुम निराश होकर साहस न छोड़ दो।

हमारे प्रिय उद्धारकर्ता की बदनामी का बयान, जो उन्होंने हमारे बदले में धीरज से सहा, ये दिल को छू देने वाला है, और शायद इससे हमदर्दी और इसके विवरण को पढ़ने के द्वारा, अन्य किसी भी बात की तुलना में, बहुत सारे लोगों का मन प्रभु के प्रति पश्चाताप की ओर फिरा है। प्रभु के संघर्ष और बलिदान का यह संदेशा उनके सामने भी अपनी सामर्थ्य नहीं खोता है, जो हमारे प्रभु और उनकी छुड़ौती को जिसे उनके बहाये गए लहू ने संपन्न किया, पहले से ही स्वीकार कर चुके हैं; हर बार जब हम प्रभु यीशु पर ध्यान करते हैं, जिन्होंने अपने विरोध में पापियों का इतना विरोध सहा, जब हम यह याद करते हैं की वे ऐसी ताड़ना के अयोग्य थे, और उन्होंने जो भी किया और सहा वह सब हमारे बदले में किया गया उनका बलिदान था, तब यह संदेशा हमारे मन को पिघला देता है। प्रेरित इस विषय के साथ अपने सबसे प्रबल पाठ में से एक की ओर संकेत करते हैं, यह विनती करते हुए की प्रभु के सभी चेलों को मसीह की नम्रता, धीरज और उनके कष्टों पर ध्यान करना चाहिए, जिसे उन्होंने सबसे अन्यायपूर्ण होने के बावजूद भी हमारे लिए सहा। यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो प्रभु यीशु के पदचिन्हों पर चलते हुए जब हम तुलनात्मक रूप में हल्के क्लेशों को सहेंगे, तो हमारे मनों में हम हताश और निराश हो जायेंगे। `Z'98-160` R2313:5 (Hymn 212) आमीन

रात का गीत (18 अप्रैल)

मत्ती 26:27 फिर उस ने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, तुम सब इसमें से पीओ।

हमारे प्रभु स्पष्ट रूप से यह बताते हैं की यह कटोरा, दाखमधु का रस, लहू को यानि जीवन को दर्शाता है, जो की बनाये रखे जानेवाला जीवन नहीं है, बल्कि बहाया गया या दिया गया, भेंट में चढ़ाया हुआ, बलिदान किया गया जीवन है। वे हमें बताते हैं की उन्होंने इस लहू को हमारे पापों की क्षमा के लिए बहाया था, और वे हमें यह भी बताते हैं की सब लोग जो प्रभु के बनेंगे, उनके लिए यह आवश्यक है की वे इस कटोरे में से पियें - उन सब को अवश्य प्रभु के बलिदान को स्वीकार करना चाहिए और विश्वास के द्वारा इसे अपनाना चाहिए। उन सब लोगों को जो विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जायेंगे जीवन को इसी एक स्रोत से ग्रहण करना चाहिए। वे लोग कोई ऐसा दावा नहीं करेंगे की किसी भी महान शिक्षक पर विश्वास करके और उसके प्रति आज्ञाकारी होकर समान वस्तु मिलेगी, और यह अनंत जीवन को लेकर आएगा। अनन्त जीवन को पाने का और कोई मार्ग नहीं है, बजाये इसके की एक ही बार छुड़ौती के दाम में पुरे संसार के पापों के निमित्त बहाये गए लहू को स्वीकार किया जाये। और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें। उसी तरह हमारे लिए नए स्वभाव को प्राप्त करने का भी कोई और तरीका नहीं है, बजाये इसके की, इस कटोरे में से पीने के प्रभु के इस न्योते को स्वीकारा जाये, और उस एक रोटी के सदस्य की तरह हम भी प्रभु के साथ तोड़े जाएँ, और उनकी मृत्यु के बपतिस्मा में उनके साथ गाड़े जाएँ, और इस प्रकार से उनकी महिमा, आदर और अमरता में भी हम उनके साथ सहभागी हों.... आइये हम सब, जब हम इस भव्य

यादगार के दिन को मनाएँ, तो प्रभु को हमें धर्मी ठहराने के लिए धन्यवाद देना न भूलें, और हमारे उद्धारकर्ता के साथ संगी बलिदान करने वाला होने के उस भव्य विशेषाधिकार के लिए जिसमें हम आनंदित होते हैं, धन्यवाद करें, और मसीह के क्लेशों की घटी को अपने शरीर में पूरा करें। और यद्यपि इस अवसर पर हम दुःखी, विचारमग्न, ध्यानमग्न होते हैं और हमारे हृदय खोज से भरे हुए होते हैं, लेकिन आइये, जैसा की हमारे प्रभु ने किया, हम भी विश्वास के द्वारा जय पाएँ और जिसने हमें अंधकार से निकालकर अद्भुत ज्योति में लाया और जिसने इस प्रकार से अभी के समय के सबसे महान काम में जो चल रहा है, अपने साथ सहकर्मी बनने और अपनी संगती का विशेषाधिकार दिया है, उनकी स्तुति और प्रशंशा के गीत गाते हुए आगे बढ़ते जाएँ। `Z'01-76` R2772:6; 2773:5 (Hymn 122) आमीन

रात का गीत (19 अप्रैल)

मत्ती 26:29 में तुम से कहता हूँ, कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊंगा, जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊँ।

जब परमेश्वर का राज्य आएगा तब अभी की पीड़ा और दुःख अतीत की बातें हो जायेगी। दाखमधु बनाने की प्रक्रिया खत्म हो जायेगी और हर जगह आनंद और उल्लास का दाखमधु दिखेगा। यह आनंद और आशीष का प्रतिनिधि होगा, जो हमारी कल्पना से परे है। यह छोटी झुण्ड के हर उस सदस्य के लिये है, जो अपने उद्धारकर्ता के साथ अभी दुःख उठा रहे हैं, और बाद में महिमा पायेंगे। परमेश्वर का यह राज्य बहुत नजदीक है और करीबन 19 सौ साल और नजदीक है, उसकी तुलना में जब प्रभु यीशु मसीह ने यह वचन बोले थे। और इसका सबूत यह है की हर जगह धीरे धीरे यह सच्चाई बढ़ रही है। हमको भी पहले से ही आनंदित होते रहना है। और

हमें विश्वासी रहना है, अभी के समय में कष्ट का प्याला, दुःख का प्याला, अपमान का प्याला पीने में। जब हम ऐसा रहेंगे तो हम परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम और वफ़ादारी की गवाही देंगे। `Z'04-143` R3365:1 (Hymn 225) आमीन

रात का गीत (20 अप्रैल)

1 कुरिन्थियों 5:7-8 हमारा भी फसह जो मसीह है, बलिदान हुआ है। इसलिये आओ, हम उत्सव में आनन्द मनावें।

क्या मतलब छिपा है इन वचनों में, जब इन्हें यादगार के दिन के भोज के सम्बन्ध में यहूदियों के फसह की यादगार के रूप में देखा जाता है। छाया (Type) का प्रकाश कैसे असलियत (Anti-type) को रोशन करता है! जैसे इस्राएल के पहलौठों पर मृत्यु का खतरा था, उसी तरह "पहिलौठों की कलीसिया जिन के नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं", वे भी अभी के समय में अनंत जीवन या अनंत मृत्यु की परीक्षा से होकर जा रहे हैं। और जिस प्रकार से उस समय के सभी पहलौठे तब तक सुरक्षित थे, जब तक वे उस घर में थे और मेमने को खा रहे थे जिसका लहू घर की चौखट और अलंगों पर लगाया गया था, उसी तरह हम भी जो विश्वास के घराने में उत्तम "छिड़काव के लहू" के अंदर बने रहते हैं, और हमारे फसह के मेमने, यानि यीशु को खाते हैं, मृत्यु से सुरक्षित हैं - हम लोगों को परमेश्वर के प्रावधानों के अंदर अनंत जीवन मिलना पक्का है। अभी के समय में हम छाया के मेमने को नहीं पहचानते बल्कि उसकी जगह यीशु को हमारा फसह का मेमना मानते हैं जो कि, "परमेश्वर का मेमना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है।" हम उनको खाते हैं, उनके मांस को शाब्दिक रूप में खाने के मतलब से नहीं, बल्कि विश्वास के द्वारा मसीह के बलिदान के मूल्य में सहभागी होकर उसे अपना देने के मतलब से। इस पुरे सुसमाचार

युग के रात के समय में हम हमारे मेमने को खाते हैं - हजार वर्ष की सुबह के आने तक, जब हमारा छुटकारा हो जायेगा। हर साल मनाया जानेवाला यादगार का भोज हमारा उत्सव नहीं है, बल्कि इसका केवल एक उदाहरण या आदर्श है - जो की सबसे सुन्दर है, सबसे पवित्र है, मददगार है। इसीलिए आइये विश्वास के इस उत्सव को हम मनावें और यादगार के भोज को भी मनावें। `Z'08-37` R4128:3 (Hymn 190)
आमीन

रात का गीत (21 अप्रैल)

कुलुस्सियों 3:13 जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो।

क्षमा करने का स्वभाव हमेशा हमारे साथ होना चाहिए, और हर समय हमारे द्वारा प्रकट किया जाना चाहिए। हमारी प्रेम से भरी उदारता और दयालुता और कोई भी बुरा नहीं सोचने की इच्छा - या जितना कम संभव हो उतना ही सोचना - जीवन के सभी शब्दों और क्रियाओं में प्रकट जाना चाहिए। यह मार्ग परमेश्वर के जैसा है। परमेश्वर हमारे प्रति दयालु, परोपकारी, उदार भावना रखते हैं, जब हम पापी ही थे; न ही परमेश्वर ने पापियों से क्षमा माँगने की प्रतीक्षा की, लेकिन तुरंत उनकी अच्छाई करने और क्षमा करने की भावना को प्रकट किया। पूरे सुसमाचार का संदेशा इसी पर है कि: "हम परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लें"। हमारा हृदय क्षमा के प्रति इस स्वभाव से इतना भरा होना चाहिए कि हमारे चेहरों पर कठोरता न हो, न ही हमारे शब्दों में एक कड़वाहट की चुभन हो। इसके विपरीत हमारे चेहरे और शब्दों को, प्रेम से भरी क्षमा को प्रकट करनी चाहिए, और यही हमारे हृदयों में हर समय होनी चाहिए। `Z'12-67` R4978:3 (Hymn 21) आमीन

रात का गीत (22 अप्रैल)

यशायाह 53:12 इस कारण मैं उसे महान लोगों के संग भाग दूंगा, और, वह सामर्थियों के संग लूट बांट लेगा; क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया, वह अपराधियों के संग गिना गया; तौभी उसने बहुतों के पाप का बोझ उठ लिया, और, अपराधियों के लिये विनती करता है।

पिता को अच्छे से पता था कि उनके पुत्र के विश्वास और आज्ञाकारिता को बहुतायत से पुरस्कृत किया जाएगा। पिता अच्छे से जानते थे कि यीशु के प्राण, उनका अस्तित्व, आदम और उसकी जाति के लिए पाप - बलि बनेगा, और वे अच्छी तरह से जानते थे कि अंततः उनका पुत्र अपने अपने प्राणों का दुःख उठाकर इनाम को देखेगा जो उसे तृप्त करेगा, जो इनाम हर परीक्षा, हर आंसू, हर दर्द की भरपाई करने की तुलना में कहीं अधिक होगा। और क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है की परमेश्वर के प्रावधानों में इस सुसमाचार युग के बुलाये गए लोगों में से हर एक अपने हृदय को यही सांत्वना और आश्वासन दे सकते हैं, और यह जान सकते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं? और क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है की हमारे पास यह आश्वासन भी है कि यदि हम उसके साथ दुःख उठाएँगे तो हम उसके साथ राज्य भी करेंगे, कि यदि हमारे उद्धारकर्ता के पदचिन्हों पर चलते हुए हमें अपने प्राणों का दुःख उठाना पड़े, तो हमें भरपाई में कहीं अधिक संतुष्टि मिलेगी, और यह कि प्रभु के वचन इसे पक्का भी करते हैं? उन सभी के लिए जो विश्वास में प्रभु के वादों को स्वीकार करते हैं, मामला निश्चित हो जाता है - "चाहे जो भी हो जाये, विश्वास दृढ़ता से उस पर भरोसा कर सकता है।" `Z'05-206` R3591:4 (Hymn 111) आमीन

रात का गीत (23 अप्रैल)

1 शमूएल 12:22 यहोवा तो अपने बड़े नाम के कारण अपनी प्रजा को न तजेगा।

भविष्यद्वक्ता शमूएल ने शारीरिक इस्राएलियों से विनती की, परमेश्वर ने उनके लिए जो महान कार्य किए हैं, उन्हें वे याद करें, और उन्हें धन्यवाद करें और उनके प्रति विश्वासी रहें -- उन्हें जो मिस्र देश से छुटकारा मिला, जब तक उन्होंने इस्राएल के देश में प्रवेश नहीं किया तब तक परमेश्वर ने उनका वनवास में पूरा मार्गदर्शन किया; पर जब हम इन वचनों को आत्मिक इस्राएली पर लागू करते हैं, तो ये वचन कितने बड़े वेग के साथ हमारे पास आते हैं! परमेश्वर ने हमें मिस्र के दासत्व से छुड़ाया है, जो की पाप और मरन का दासत्व था। परमेश्वर ने हमें अन्धकार में से निकालकर अपनी अदभुत ज्योति में लाया है। उन्होंने हमारे पैरों को ना ही सिर्फ दलदल में से निकालकर, चट्टान पर रखा है, जो की प्रभु यीशु हैं; जी हाँ, इससे भी ज्यादा! उन्होंने हमारे मुंह में नया गीत दिया है, हमारे परमेश्वर की प्रेम से भरी भलाई और करुणा का। उन्होंने न ही सिर्फ हमारे पापों को क्षमा किया है, बल्कि प्रभु यीशु में हमें स्वीकार किया है, और प्रभु यीशु के साथ साँझा - वारिस बनने के लिए न्योता भी दिया है। उन्होंने हमारे हृदय को इस धरती पर वनवास का जीवन जीने के लिए, न ही सिर्फ बहुत ही बड़े और बहुमूल्य वादों के द्वारा ताजगी दी है, पर हमारे लिए बहुत ही बड़ी और बहुमूल्य चीज़ों को रखा है, जिसकी उन्होंने अपनी पवित्र आत्मा के द्वारा, हमको झलकी दी है, या चखाया है, जो हमारे लिए उनकी विरासत का एक बयाना है। `Z'08-203` R4201:4 (Hymn 19) आमीन

रात का गीत (24 अप्रैल)

मरकुस 4:20 जो अच्छी भूमि में बोए गए, ये वे हैं, जो वचन सुनकर ग्रहण करते और फल लाते हैं।

आइये प्रिय भाइयों, न केवल यह सुनिश्चित करें कि हमारा हृदय अच्छी भूमि हो, और सुनिश्चित करें कि हमने परमेश्वर के वचन को, जो राज्य का वचन है, उसे प्राप्त किया है और उसे विकसित कर रहे हैं, पर हम इन वचनों को अपने जीवन में लागू करके उसके मुताबिक अपने जीवन को जीकर फल भी लाते हैं। इसको देखते हुए कोई इस फल को तीस गुणा, कोई साठ गुणा, और कोई सौ गुणा लाते हैं, जिससे की स्वामी की प्रशंसा होती है, आइए हम ये निर्धारित करें परमेश्वर के अनुग्रह से, जो हम जानते हैं कि वह अनुग्रह हमारा है और हमारी सहायता करेगा, हम उस श्रेणी के होंगे जो सौ गुणा फल लाते हैं -- हमारी सर्वोत्तम क्षमता के मुताबिक और हमारे राजा की सेवा के लिए। हम अपनी विश्वसनीयता को कैसे बढ़ा सकते हैं? हम इसका उत्तर देते हैं, अपने हृदय की ईमानदारी को बढ़ाकर, जो हममें बीज को ज्यादा मात्रा में बोने के लिए हमें तैयार करता है और जो हमें परिपूर्णता से इसको आगे ले जाने में भी सक्षम बनाता है। कटनी नज़दीक है, आइये हम परिश्रम करें, इसलिए जबकि अभी भी अवसर है, ताकि हमारे स्वामी हमें फल लाता हुआ पा सकें, हमारे सर्वोत्तम स्तर के मुताबिक, जो हमारी प्रकृति, परिवेश और अवसरों के अनुसार जो हमारे पास हैं, संभव है। `Z'06-126` R3765:1 (Hymn 225) आमीन

रात का गीत (25 अप्रैल)

2 तीमुथियुस 1:3 जिस परमेश्वर की सेवा में अपने बाप दादों की रीति पर शुद्ध विवेक से करता हूँ, उसका धन्यवाद हो कि मैं अपनी प्रार्थनाओं में तुझे लगातार स्मरण करता हूँ।

वे, जिनके हृदय अपने शत्रुओं से प्रेम कर रहे हैं, और विश्वास के घराने से प्रेम करते हैं, और सबसे ऊपर, परमेश्वर से प्रेम करते हैं, यदि उनका हृदय किसी भी दृष्टिकोण से, दूसरों की भलाई के बारे में न खोजें, और उनके लिए प्रार्थना न करें, तो ये वास्तव में अपने हृदय में बहुत ज्यादा संवेदनशील होंगे। ऐसे हृदयों में क्रोध, कटुता, कलह, ईर्ष्या के लिए कोई जगह नहीं होगी। वैसे हृदयों में परमेश्वर का प्रेम, पवित्र अभिषेक के तेल के रूप में बहाया जाता है, पवित्र मलहम के एकीकरण के रूप में, जो सभी संवेदनाओं को चिकना कर देता है, न केवल चेहरे को, बल्कि जीभ और हृदय को भी चिकना करता है; क्योंकि "जो हृदय में भरा है, वही मुँह से निकलता है," और शुद्ध फव्वारे से कड़वा पानी नहीं निकल सकता। `Z'08-203` R4201:2 (Hymn 239) आमीन

रात का गीत (26 अप्रैल)

परन्तु रोमियों 13:11,12 अब तुम्हारे लिये नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है; क्योंकि जिस समय हम ने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है। रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर है।

यदि प्रेरितों ने अपने दिनों के सन्तों को कहा था, "समय को पहचान कर ऐसा ही करो, इसलिये कि अब तुम्हारे लिये नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है," आदि,

क्योंकि उस समय में प्रेरितों ने सुसमाचार के युग में प्रवेश किया था, यह विशेषाधिकार के साथ कि, इस स्वर्गीय बुलावे की दौड़ के इनाम के लिए वे दौड़ सकें, अभी के समय में जो इस सुसमाचार युग के अन्त का समय है, प्रेरितों का यह वचन और ज्यादा वेग से लागू होता है!... जी हाँ, "रात बहुत बीत गई है", और "दिन [हज़ार साल के राज्य का महिमाय वाला दिन] निकलने पर है"। अब भी सुबह की हल्की रोशनी दिखाई देती है। यह वह दिन है जब हमारे स्वर्गीय दुल्हा, उनके लिए तैयार और इन्तज़ार करती दुल्हन को ग्रहण करेंगे, और समय कम है जिसमें हमको हमारे राजा के साथ इकठ्ठा होना के लिए तैयार होना है। यह वास्तव में नींद से जागने के लिए सही समय है; अभी ही हमारा उद्धार है, हमारी महिमा वाला छुटकारा बहुत निकट है। `Z'06-246` R3830:5 (Hymn 230) आमीन

रात का गीत (27 अप्रैल)

1 यूहन्ना 5:3 क्योंकि परमेश्वर से प्रेम रखना यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें; और उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं।

जिसके हृदय में प्रभु की आशीषों के प्रति धन्यवाद की भावना है और जो परमेश्वर के प्रति आभार और धन्यवाद प्रकट करता है, उनमें से कौन होगा जो पूरे हृदय से वास्तव में प्रभु की सेवा सच्चाई में नहीं करेगा! जिसके हृदय का नजरिया ऐसा है, उनमें से कौन होगा जो प्रभु के वचन को याद करने में असफल रहेगा और कौन होगा जो उनकी दिव्य सहायता को खोजने में और जो इस दिव्य सहायता को पाने की जरूरतें हैं, उसका पालन नहीं करेगा, जैसा की ये वचन कहता है, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे"। उनके लिए प्रभु का ये आदेश बड़े रूप से बताता है। प्रभु का ये वादा, इन आदेशों के द्वारा, प्रतिदिन, नए वेग से देखा

जाता है, नया मतलब लाता है। यदि वह धन्यवादी रहता है, बीते हुए समय में दिए गए प्रभु के प्रावधानों के प्रति आभार प्रकट करता है, तब परमेश्वर के आदेशों के मतलब की गहराई को समझना उसके लिए कठिन नहीं होगी; पर फिर भी वह आनंदित होगा दिन - प्रतिदिन प्रभु के सहानुभूति वाले नजरिये के प्रति, "हे मेरे परमेश्वर मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ; और तेरी व्यवस्था मेरे अन्तःकरण में बनी है"॥ ऐसा हमारे साथ भी हो। जैसा की प्रेरित कहते हैं, यदि हम प्रभु के आदेशों के मुताबिक करेंगे, और ये आदेश हमारे लिए कठिन नहीं हैं, और यह हमारे लिए परमेश्वर के प्रति गवाही होगी, कि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं और वे भी हमें प्रेम करते हैं, और हम उनकी सच्चाई की आत्मा से ज्यादा से ज्यादा और भर जाएंगे। 'Z'08-203` R4201:5 (Hymn 225) आमीन

रात का गीत (28 अप्रैल)

लूका 6:32, 33 यदि तुम अपने प्रेम रखने वालों के साथ प्रेम रखो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी भी अपने प्रेम रखने वालों के साथ प्रेम रखते हैं। यदि तुम अपने भलाई करने वालों ही के साथ भलाई करते हो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी भी ऐसा ही करते हैं।

परमेश्वर के लोगों के लिये ठहराया गया स्तर धन्यवाद देने से कहीं ज्यादा है, हालाँकि इस ऊँचे स्तर में धन्यवाद देने को अवश्य शामिल करना चाहिए। हमारे लिए ठहराया गया स्तर परोपकार करने का है, जो हमारे विरुद्ध अपराध करते हैं, और जो हमारे विरुद्ध बुराई की सभी प्रकार की झूठी बातें बोलते हैं, उनको क्षमा करने का है। जो अपने प्रभु के इस चरित्र की समानता को जिस अंश में प्राप्त करते हैं, वे उसी अनुपात में प्रभु से एक अतिरिक्त आशीष पाते हैं, और उनको प्रभु ने

आनंदित और मगन रहने का आदेश दिया है, और बताया है की उनके लिये स्वर्ग में बड़ा फल है। (मती 5:12) `Z'08-202` R4200:5 (Hymn 219) आमीन

रात का गीत (29 अप्रैल)

इब्रानियों 12:14 सब से मेल मिलाप रखें।

नई सृष्टि के रूप में हमें बहुत सतर्क रहना चाहिए, विकास को जारी रखना चाहिए, शरीर पर जय पाने के लिए शक्ति में वृद्धि करनी चाहिए। तब हम सुरक्षित रहेंगे। हमें खुद ही अपना विशेष युद्ध का मैदान होना है। प्रभु के लोगों में से बहुतों में स्वाभाविक तौर से बड़ी मात्रा में मुकाबला करने का स्वभाव होता है। यह एक अच्छा लक्षण है यदि नियंत्रित हो और इसे सही दिशा में बदल दिया जाये। मुकाबला करना जरूरी है, नहीं तो हम कभी भी जयवंत नहीं हो सकते। लेकिन हमें खुद पर संयम रखने की जरूरत है कि हम भाइयों से नहीं लड़ें; और हम शैतान के साथ एक व्यक्तिगत लड़ाई में न प्रवेश करें। हमारा शैतान के साथ कोई मुकाबला नहीं है। लेकिन हमें उसका सामना करना है। प्रभु जल्द ही उसे पकड़ लेंगे और उसे एक हजार साल तक के लिये बांधेंगे। प्रभु विरोधी शैतान पर विजय प्राप्त करेंगे और उसके सभी कामों को पूर्ववत कर देंगे। लेकिन उस काम को पूरी तरह से पूरा करने के लिए पूरे हजार साल की आवश्यकता होगी। जब हम शरीर में हैं तो हमें शैतान या उसके कामों को उखाड़ फेंकने की आशा नहीं करनी है। यह हमारा लक्ष्य नहीं है। प्रभु ने हमें जो करने के लिए दिया है, वह है खुद को जीतना, इस शरीर को नियंत्रित करना जो कि आदम के पाप में गिरे हुए वंश से है, खुद को सुरक्षित रखना ताकि दुष्ट हमें नहीं छू पाए। `Z'16-212` R5923:5 (Hymn 242) आमीन

रात का गीत (30 अप्रैल)

2 तीमुथियुस 2:15 अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।

यदि हमारे स्वामी प्रभु यीशु के लिए अपनी सार्वजनिक सेवा का कार्य आरम्भ करने से पहले, अलग जाकर दिव्य योजना की पढ़ाई करना बुद्धिमानी वाला और उचित मार्ग था, तो उनके चेलों को जो पाप में गिरे हुए प्राणी हैं और जिनकी निर्णय लेने की क्षमता अपरिपूर्ण है, उन्हें प्रभु की दाख की बारी में कोई भी कार्य आरम्भ करने से पहले, प्रभु के वचनों और उनकी आत्मा की सलाह यह जानने के लिए लेना की प्रभु उनसे क्या कार्य कराना चाहते हैं, कितना अधिक उचित लगना चाहिए। यदि प्रभु के चेलों ने आमतौर पर इस मार्ग को अपनाया होता तो प्रभु के नाम पर डिंग हाँकना बहुत कम होता, और भी कम लोगों ने यह महसूस किया होता की पहले प्रभु के कार्य से सम्बंधित दिव्य इच्छा का अध्ययन किये बिना किसी भी कार्य को करने के लिए जल्दबाजी में दौड़ जाना उनका विशेषाधिकार है - ऐसा न हो कि वे प्रभु की उस योजना में बाधा बनें, जिसकी वे सेवा करना चाहते हैं। आइए हम अधिक से अधिक अपने आप पर तीमुथियुस के लिए कहे गए प्रेरितों के इस वचन को लागू करें। जब तक हम अध्ययन नहीं करते तब तक हमारे पास प्रभु की सेवा में हमारी तैयारी या उपयोगिता पर संदेह करने का हर कारण होगा। सबसे पहले आता है पूरी तरह से, अनारक्षित रूप से किया गया समर्पण; और उस संकल्प को पूरा करने के पहले चरण के रूप में दूसरी बात आती है - दिव्य इच्छा, दिव्य वचन, दिव्य योजना का अध्ययन; और उसके बाद आता है प्रभु की दाख की बारी में परिश्रम करना।

`Z'06-40` R3717:1 (Hymn 154) आमीन